

DPN 5923

Title : दशबल स्तव स्तोत्र DAŚA BALA STAVA STOTRA

Run. No. 6614

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्र hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 20.5 x 8

Folios 8

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

निरयजमानास्मिन्नसकनं जयमानं यत्तु स मावेकं ॥ १५ ॥

आहमनुशतमुद्रकाणि ॥ नाशयदाशसमाकुरुवालि ॥ १६ ॥ र्नेरुर्देव ॥ १७ ॥
ममनोकोश ॥ यमनोविदिधाजिविरहमघा ॥ १८ ॥ उक्तत्वावायिक ॥ १९ ॥ र्नेरुर्देव ॥
रवतायास्मिन्नसकनं ॥ २० ॥ ॥ माहमयदिनं गनं ॥ २१ ॥ र्नेरुर्देव ॥ २२ ॥
सह ॥ यमिन्नुत्तमं यनवाह ॥ २३ ॥ र्नेरुर्देव ॥ २४ ॥ र्नेरुर्देव ॥ २५ ॥
गमान् र्नेरुर्देव ॥ २६ ॥ र्नेरुर्देव ॥ २७ ॥ र्नेरुर्देव ॥ २८ ॥ र्नेरुर्देव ॥ २९ ॥
तीक्ष्णव्यानवया ॥ ३० ॥ ॥ सकलव्यापननिकिर्नन ॥ ३१ ॥ र्नेरुर्देव ॥ ३२ ॥

गगनसदहा ॥ रगवननयमकवृद्धासिंधू ॥ त्वंजनविदिताकावृद्धावंधू ॥ १० ॥
 लीलाविदवितक ॥ विरंग ॥ त्वंयवद्विषययासया ॥ दिवाध्यातसमादि
 तविलं ॥ त्वंयवद्विषययासया ॥ ११ ॥ यवमयकवृद्धावंधू ॥ मः
 धियवितावर्नका ॥ तेरवी ॥ कथमिहमोदमहावगदष्ट ॥ विषयसमिदाकृण
 लंगवता ॥ १२ ॥ सकलजनाथयुतियाकवृद्धा ॥ गार्किंगवतानियतवदः
 लता ॥ जननवकसिक्किमिषवर्क ॥ रगवतयूवतामादिनवर्क ॥ १३ ॥ नाथ

कृयातया ॥ मविमाला ॥ सत्यैकधार्मिकजलधारा ॥ थलजननिमानतवद्वदल
 सत्रनिनवतवमलिगमलार्थ ॥ १४ ॥ गिरगवतमवतनीयि ॥ ऊर्ध्वनयम
 मगतदी ॥ जगद ॥ शीयाग ॥ जीवदार्सी ॥ गगनकुसुदनीवेविधविः
 नार्सी ॥ १५ ॥ ॥ गगनकुसुदनीवेविधविः ॥ ववयनियाविषवित ॥ गदका
 गिसमाका ॥ १६ ॥ ॥ डैनमासाकनाथाय ॥ सुहाय ॥ मयमरुय ॥ कलसर्वस
 त्वा ॥ संपूर्णविदवदनीवजयगमर्ग ॥ सर्वल्लानमकृष्टा ॥ दृढमूर्किसार्गी ॥ तय

प्रयागिव नृधितल्लानवासि ॥ १ ॥ उडुंगनागववयीनवाधाननृक
कांधनदिमडुवाचमिवासुदरी ॥ वक्रधनशुतिधनमधुनववाक ॥ नयप्रया
मिमृदवधुधननमामि ॥ २ ॥ मालाधनकनकवलविडुधितगि ॥ नयप्रया
टविडुधितवालचंद ॥ कृष्णाजेनावलधवायसुवदुवरी ॥ नयप्रया
ननूनमामि ॥ ३ ॥ नीलाकनाधनवलकिंतनामलेय ॥ कृष्णयवितुसदर्ववल
सयनाड ॥ विडुमलियववकृकलचुष्टन ॥ नयप्रयागिडुतिसर्वकृतनमा

दि ४ ॥ लवनासि नराधितरवेसदा ॥ संसारयकतिमिनाधुवमग्रस
ल ॥ गताकेतयधमनूरुववाविमार्ग ॥ नयप्रयागिवनमार्गदेदनमामि ॥ ५
॥ गताचयननवकषूजुविनिमार्ग ॥ नीतिहृददिविभातनूरुसयदी ॥ यतान
किसकलइवविनायकि ॥ नयप्रयागिनवकाग्रिममनमामि ॥ ६ ॥ सीगास
यतिरयमयालवागमनुरुमि ॥ दधमवाजुमिदजागतकामनृयि ॥ यकर्मरुमिमिद
धीसितगनिमिर्ल ॥ नयप्रयागिदुगमासतर्तनमामि ॥ ७ ॥ उवावयननवव

१५
०
५
यमनादवाय लेलाकनाथजगयकलसर्वसखा ॥ ३४ ॥ स्वाधीनितवस्यवामिमिम
किइर्वी तयमयाभिरुताकिविम ममामि ॥ ८ ॥ स्वयंतनाकगतयकवृध
वसन सविमूर्खउदलयवेतो जि मंग ॥ ३५ ॥ स्वयिठितगनीनरुषा उवा लीमि
यमयाभिरुयसकलनमामि ॥ ९ ॥ अन्धान्यरुक्कधयीठित उगसत्वा
संथीयतकवृधक सुवरनदीरि ॥ ३६ ॥ यूरिषनं वदददुरुषा उवा ली तयमया
भिरुतुरुकुरुषानिमामि ॥ १० ॥ गलातर्मरुवनवठितगनीदुरुय विताम

५
भिरुलितवलयरावरास ॥ ३७ ॥ कडावाकसगली ॥ ३८ ॥ वननेतमसु तयमयाभिरु
मरुगुरुकनमामि ॥ ११ ॥ गलावयनितवलिगममनावथसा ॥ ३९ ॥ दियगुरुल
मनुरुवयिधुयार्ण धर्मकेथनयविगानेगदानवर्द तयमयाभिरुवधर्मदद
मामि ॥ १२ ॥ गलावयनितदिविठुठलदवयूणा दानस्यदीनरुधयीठित
इ१ ॥ स्वितवि तयावयनियविधुसमृद्धिनली तयमयाभिरुवधर्मदद
॥ १३ ॥ तस्कासवृयसूयदभिगवाकसिठि ॥ ४० ॥ कामावसनवविगववाकसी

रिक्तं वा लस्य विरुय विवर्जितं धर्मा विरुं । गीय प्रया विवर्जय धर्मानामि ॥ १४ ॥
विदुमं गुरुमिह मिवा ठिसू रुवन्ति । गत्वा वयं न ज्ञानं वयं नोत्सवन्ति ॥ निष्ठा
निर्गन्धेन घनाय ददीति धर्मः । गीय प्रया विवर्जय धर्मानामि ॥ १५ ॥ इति
कर्ममोदयेऽपि उक्तं वयं गृह्णीं । कापी ह्युक्तं वयं गीय प्रया विवर्जय धर्मानामि ॥ १६ ॥
हिंदु धर्मो वयं गृह्णीं । गीय प्रया विवर्जय धर्मानामि ॥ १७ ॥
हजु धर्मो वयं गृह्णीं । गीय प्रया विवर्जय धर्मानामि ॥ १८ ॥

मदनवलविकुड। कायथादुदकाडु। लिखनविदिकडु। स्त्रीनगीशुसद
कासमसखरुलदाडु। रुडुवहानलेगी। दगवल १॥ २ ॥ मसुवनमव
नगागी। मगजसायहरेवी। सकलउलधासा। साशुष्टीकागद्व ॥ खायेन
मनजप्रमो। अकथानिलयडु। दगवल ४ ॥ ४ ॥ उदयगिदिमन
शु। विमददशमी। किमिबमिकलहना। वक्रवक्रपुजाना। नविबयिमदः
लालीसर्वथासायिसफा। दगवल ५ ॥ ५ ॥ दिवदगनयाडु। गीतमभी

जशधिका। कालितवुवजला। सर्ववृजामलिज। अविगतमदवाग। सर्वथासा
यिसफा। दगवल ६ ॥ ६ ॥ घववक्रुजवकुका। बाहुशध्राव्रतका। जय
नियमकलाया। मवदयवका। जमलकमलयानि। सायिवक्तायसफा। द
गवल ७ ॥ ७ ॥ हिमगिदिगिबगीरा। सयजहायविती। लिखनदहनदका।
मययदशरुवीय। सहगीनिवीवयगा। सादिमकागिगुवी। दगवल ८ ॥ ८ ॥
कलिमकलिसयालि। इजयादानवाना। सनयानिबयिसया। दिगमासु

अवयवः कनसा का। रुर्मरुं गा विनाया। कतयुतदं गिख। या सवा मीका वगी।
 यवतिजघजका। मादिगा रुयि सुफा। दशवत्त॥ १३ ॥ उमववृण
 कवला। रुकदं गान लीदा। देवि दुवेम ननवा। लाकया ला रुथान्य। यवतिमद
 कदाक। नीदिगा रुयि सुफा। दशवत्त॥ १४ ॥ रुवडलधिनिमग्रा। माद
 जाला रुगां गी। मूतिक यिलक नाया। रामिगा मूडयता। समसख रुलही ना।
 वाली गा रुयि सुफा। दशवत्त॥ १५ ॥ अरुन निदुलडनी। तमसियस

का। रुष्ठा विगा लसयन। विषया यधान। काल सुगा गुरु रुले। यविदं रुमान। का
 नीकिय सगता मावनमा शुतस्ये॥ १६ ॥ तीर्थ वल्ल कलसता। निधि वल्लिगा
 री। रुकि वरु निनवत। कयम ययति। गहमून का विधने। ययि सखु गस्य। नकी
 यरु गुल निधि। युग सागवस्य॥ १७ ॥ सुयरातं तवे कस्य रुना। मिगव रुय
 अरुन निमिना धाना। निर्यम सुखि गा वेवि॥ १८ ॥
 ॥ १९ ॥ युत १४ राग युत नृश्रिता। ववि। युत १४ राग का दून १४ वसवनी। मृग

